بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

# क़र्ज़ से पनाह माँगना

उरवह رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि सैयदा आयशा رضی اللہ عنہا ने उनको बताया कि रसूल अल्लाह ﷺ नमाज़ में दुआ किया करते और फ़रमाते:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِکَ مِنَ الۡمَاۡثَمِ وَالۡمَغۡرَمِ.

ऐ अल्लाह बेशक मैं गुनाह और क़र्ज़ से तेरी पनाह लेता हूँ।

किसी कहने वाले ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! आप क़र्ज़ से इतनी पनाह माँगते हैं?आप ﷺ ने फ़रमाया: आदमी जब मक़रूज़ होता है तो बात बात पर झूट बोलता है और वादा कर के उसकी ख़िलाफ़ वर्ज़ी करता है-[सहीह बुख़ारी:2397]

सैयदना अब्दुल्लाह बिन अमर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ इन कलिमात से दुआ किया करते

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِکَ مِنۡ غَلَبَةِ الدَّیۡنِ وَشَمَاتَةِ الۡاَعۡدَاءِ.

सैयदना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ कहते हैं,रसूल अल्लाह ﷺ ने अबू तलहा رضی اللہ عنہ से फ़रमाया:अपने बच्चों में से कोई भी बच्चा मेरे लिए तलाश कर दो जो मेरी ख़िदमत करे-अबू तलहा رضی اللہ عنہ अपनी सवारी पर मुझे पीछे बिठा कर ले गए-जब भी रसूल अल्लाह ﷺ कहीं क़याम फ़रमाते तो मैं आपकी ख़िदमत करता-चुनांचे मैं अक्सर आप ﷺ को (ये)फ़रमाते हुए सुनता:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِکَ مِنَ الۡهَمِّ وَالۡحَزَنِ وَالۡعَجۡزِ وَالۡکَسَلِ وَالۡبُخۡلِ وَالۡجُبۡنِ وَضَلَعِ الدَّیۡنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ.

ऐ अल्लाह! बेशक मैं रंज व ग़म,आजिज़ी,सुस्ती,बुख़्ल,बुज़दिली,क़र्ज़ चढ़ जाने और लोगों के ग़ल्बे से तेरी पनाह लेता हूँ-(सहीह बुख़ारी :5425)

## क़र्ज़ से निजात की दुआऐं

सैयदना अली رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि एक ग़ुलाम उनके पास आया और उसने कहा: मैं मकातबत से आजिज़ आगया हूँ पस मेरी मदद फ़रमाइए! आप رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: क्या मैं तुम्हें वो कलिमात न सिखा दूँ जो रसूल अल्लाह ﷺ ने मुझे सिखाए थे? अगर तुम पर सैर नामी पहाड़ के बराबर भी क़र्ज़ होगा तो अल्लाह उसको भी तुम्हारी तरफ़ से अदा कर देगा-आप رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: तुम यूँ कहो:

اَللّٰهُمَّ اکۡفِنِیۡ بِحَلَالِکَ عَنۡ حَرَامِکَ وَاَغۡنِنِیۡ بِفَضۡلِکَ عَمَّنۡ سِوَاکَ.

ऐ अल्लाह! मुझे अपने हराम(करदा)से अपने हलाल के साथ किफ़ायत फ़रमा और मुझे अपने फ़ज़ल के साथ अपने अलावा सब से बेनियाज़ कर दे-

सैयदना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ से रिवायत है वो कहते हैं,रसूल अल्लाह ﷺ ने मुआज़ رضی اللہ عنہ से फ़रमाया: क्या मैं तुम्हें ऐसी दुआ सिखाऊँ जिस के ज़रिए तुम दुआ करोगे तो अगर उहद पहाड़ के बराबर भी क़र्ज़ हुआ तो अल्लाह तुम से अदा करा देगा-ऐ मुआज़ رضی اللہ عنہ! तुम कहो:

اَللّٰهُمَّ مَالِکَ الۡمُلۡکِ تُؤۡتِی الۡمُلۡکَ مَنۡ تَشَآءُ وَتَنۡزِعُ الۡمُلۡکَ مِمَّنۡ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنۡ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنۡ تَشَآءُ بِیَدِکَ الۡخَیۡرُ اِنَّکَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ رَحۡمَانُ

الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ،وَرَحِيْمَهُمَا تُعْطِيْهُمَا مَنْ تَشَآءُ،وَتَمْنَعُ مِنْهُمَا مَنْ تَشَآءُ،اِرْحَمْنِیْ
رَحْمَةً تُغْنِيْنِیْ بِهَا عَنْ رَّحْمَةِ مَنْ سِوَاکَ.

ऐ अल्लाह! बादशाहत के मालिक! तू जिसे चाहता है बादशाहत देता है और जिस से चाहता है बादशाहत छीन लेता है,जिसे तू चाहता है इज़्ज़त देता है और जिसे तू चाहता है ज़लील कर देता है,तेरे ही हाथ में सारी भलाई है! बेशक तू ही हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाला है- दुनिया और आख़िरत का रहमान और उन दोनों का रहीम !तू जिसे चाहता है ये(दुनिया व आख़िरत)दोनों देता है और जिनसे चाहता है इन दोनों को रोक देता है,मुझ पर ऐसी रहमत फ़रमा जो मुझे तेरे अलावा किसी और की रहमत से बेनियाज़ कर दे[सही अलतरग़ीब व अलतरहीब:1821

सुहैल رحمة الله कहते हैं कि हम में से जब कोई सोने का इरादा करता तो अबू सालेह رحمة الله उसे दाऐं करवट पर लेटने का हुक्म देते फिर कहते:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمَاوَاتِ وَرَبَّ الْاَرْضِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ رَبَّنَا وَرَبَّ کُلِّ شَیْءٍ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوٰی وَمُنْزِلَ التَّوْرَاةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالْفُرْقَانِ اَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّ کُلِّ شَیْءٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الْاَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَکَ شَیْءٌ وَاَنْتَ الْاٰخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَکَ شَیْءٌ وَاَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَکَ شَیْءٌ وَاَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُوْنَکَ شَیْءٌ اقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَاَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ.

ऐ अल्लाह ! आसमानों के रब! ज़मीन के रब! अर्शे अज़ीम के रब! हमारे रब और हर चीज़ के रब! दाने और गुठ गुठली के फाड़ने वाले! तौरात और इन्जील और फुरक़ान(क़ुरआन) को नाज़िल करने वाले ! मैं हर चीज़ के शर से तेरी पनाह लेता हूँ जिस की पेशानी तू ही पकड़े हुए है।ऐ अल्लाह! तू सबसे पहले है ,तुझ से पहले कुछ ना था ।तू सबसे आख़िर है तेरे बाद कुछ ना होगा,तू ही ज़ाहिर है तुझ से ज़्यादा ज़हिर कोई नहीं, और तू ही पोशीदा है तुझ से पोशीदातर कोई नहीं ,हमारी तरफ़ से क़र्ज़ अदा कर दे और हमें मोहताजी से बेपरवा कर दे।(सहीह मुस्लिम: 6889)

## जिस से क़र्ज़ लिया उसको दुआ देना

بَارَکَ اللّٰهُ لَکَ فِیْ اَهْلِکَ وَمَالِکَ.

अल्लाह तुम्हारे लिए और तुम्हारे अहल व माल में बरकत अता फ़रमाए। [सुनन अन-निसाई:4687]

## अदाएगी क़र्ज़ पर मक़रूज़ को दुआ देना

اَوْفَيْتَنِیْ اَوْفَی اللّٰهُ بِکَ.

आप ने मुझे पूरा पूरा हक़ दे दिया, अल्लाह आपको भी पूरा बदला दे।[सहीह अल बुख़ारी:2305]

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

**AlHuda Welfare Trust India**

Post Box Number 444, Basavanagudi Bangalore 560004 ,India

Landline:+918040924255. | Mobile phone: +91-9535612224

official email: alhuda.india@gmail.com

www.alhudapk.com | www.farhathashmi.com

AL-HUDA
Publications (Pvt) Ltd.
May 2017 | Edition: 1